A PART OF

क्रिकेट

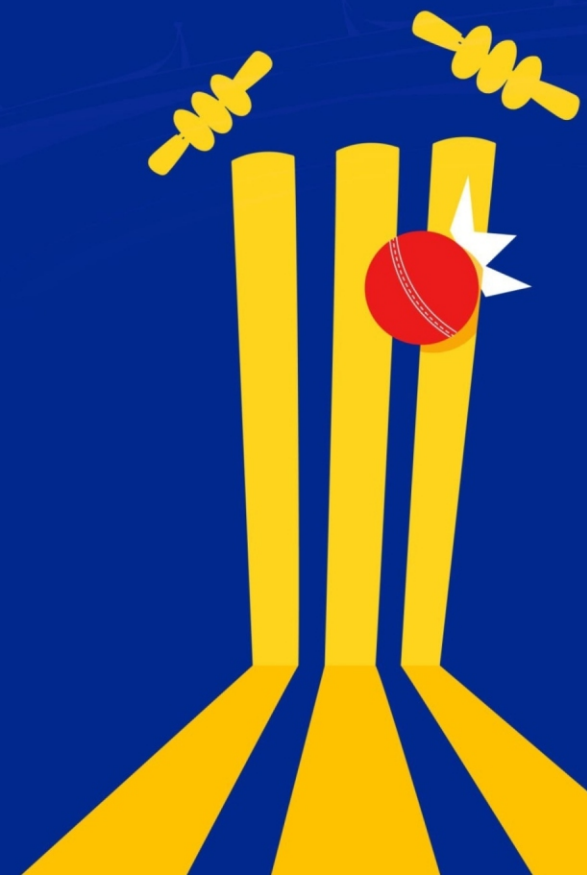

CRICKET

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

A PART OF

क्रिकेट

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

(جامع الفتاوی اردو)

Abde Mustafa Publications

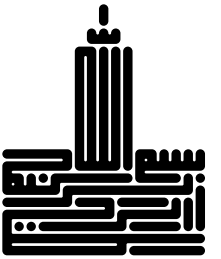

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला।
और बेशुमार दुरूदो सलाम रसूलों के सरदार मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर।

क्रिकेट

मुरत्तिबः अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादिरी
नाशिरः अ़ब्दे मुस्तफ़ा पब्लिकेशन्ज़्

तारीख़े इशाअ़त: दिसंबर 2023 ई.
कुल सफ़ह़ात: 27
किताब नम्बर: AMPBN441

कवर डिज़ाइन और फार्मेटिंग: प्योर सुन्नी ग्राफिक्स

All rights reserved.
Copyright © 2023 by Abde Mustafa Publications

Contents

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑर्गेनाइज़ेशन का तआ़रुफ़.....3
कूड़ा क्रिकेट (Cricket).....4
क्रिकेट किया है.....6
फ़तावा बहरुल उ़लूम से.....7
फ़ाइदा : 7
वक़ारुल फ़तावा से.....8
फ़ाइदा: 9
फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल से 10
फ़ाइदा: 10
वर्ज़िश के लिए खेले तो.....11
फ़ाइदा: 12
मोबाइल फ़ोन पर गेम (Game) 13
फ़ाइदा: 15
टीवी पर क्रिकेट मैच देखना कैसा है ?.....15
हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ह से क्रिकेट के बारे में ग्यारह सुवालात.....18
(1) क्रिकेट कोचिंग चलाना.....18
(2) क्रिकेट से पैसे कमाना.....18
फ़ाइदा: 18
(3) वर्ज़िश के लिए खेलना 18
फ़ाइदा: 19
(4) टीवी पर क्रिकेट देखना 19
(5) टीवी पर क्रिकेट देखने वाले की इमामत का हुक्म 19
(6) क्रिकेट टीम के लिए दुआ़ करना.....19

फ़ाइदा: 19
(7) क्रिकेट को पेशा बनाना.....20
(8) चंद मिनट के लिए क्रिकेट, फूटबाल, टेनिस वग़ैरा खेलना 20
(9) शम्अ़ सबिस्ताने रज़ा में क्रिकेट का वज़ीफ़ा.....20
फ़ाइदा: 20
(10) क्रिकेट और टेनिस की इजाज़त नहीं.....21
(11) टाइम पास के लिए खेलना.....21
फ़ाइदा: 21
ख़ातिमा, ख़ुलासा और नोट.....21
लतीफ़ा : 22

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑर्गेनाइज़ेशन का तआ़रुफ़

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑर्गेनाइज़ेशन सना 1435 हिजरी (2014 ई.) से क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात को प्रिंट मीडीया और डिजिटल मीडीया के ज़रीये आ़म करने के मक़सद के तह़त काम कर रही है। हम इस के चंद ख़ास शोबों का ज़िक्र यहां करते हैं।

• अ़ब्दे मुस्तफ़ा पब्लिकेशन्ज़् (Abde Mustafa Publications)
ये हमारा सबसे ख़ास शोबा है जहां मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर किताबें शाया की जाती हैं। ये किताबें मुख़्तलिफ़ ज़बानों में होती हैं जिनमें उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी और रोमन उर्दू वग़ैरा शामिल हैं। तमाम शाया करदा किताबों को हमारी वेबसाइट पर मुलाहिज़ा फ़रमाएं:
www.abdemustafa.org

• ई निकाह़ सर्विस (E Nikah Service)
ये एक मैट्रीमोनियल सर्विस है जो ख़ास अहले सुन्नत व जमाअ़त के लिए शुरू की गई है। इस के ज़रीये आसानी से सुन्नी रिश्ते तलाश किए जा सकते हैं। रजिस्टर करने के लिए हमारी इस वेबसाइट पर जाएं:
www.enikah.in

मज़ीद मअ़लूमात ह़ासिल करने के लिए हमसे राबता करें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑर्गेनाइज़ेशन

कूड़ा क्रिकेट (Cricket)

उ़न्वान में हमने कूड़े के साथ करकट नहीं बल्कि क्रिकेट (Cricket) ही लिखा है क्यों कि इस खेल की हैसियत कूड़े से भी गई गुज़री है। कूड़ा (कचरा) भी काम की चीज़ होती है लेकिन ये खेल "क्रिकेट" किसी काम का नहीं बल्कि एक जुम्ले में इस की ता'रीफ़ करें तो "वक़्त की बर्बादी, माल की फ़ुज़ूल ख़र्ची और ख़ुराफ़ात का मज्मूआ है"

अफ़सोस तो सबसे ज़ियादा इस बात का है कि काफ़िरों ने जहां इस खेल कूद को अपना मक़्सदे ज़िंदगी बना रखा है वहीं हमारी क़ौम ने भी इसे अपने सरों पर चढ़ा रखा है। दिल उस वक़्त और ग़मगीन होता है जब मुसलमानों के उ़लमा मदरसों में बच्चों को पढ़ाने के बजाए क्रिकेट देख रहे होते हैं और उन्हें ना जाने इस फ़ालतू काम से कौन सा फ़ाइदा ह़ासिल होता है। ये बातें बिल्कुल ज़ाहिर हैं कि किसी से ढकी छिपी नहीं। हमारे नौजवानों को देखें तो क्रिकेट की तारीख़ बड़े अच्छे से जानते हैं लेकिन अपने दीन और इस्लाम की तारीख़ से कोई ख़ास लेना देना नहीं है। एक-एक खेलने वाले को जानते हैं और उनके खेलने के अंदाज़ को जानते हैं और ये तक याद कर के रखते हैं कि कौन सा खिलाड़ी माज़ी में किस तरह खेला था।

अब तो चलो सब के पास अपना-अपना मोबाइल फ़ोन है कि जो जहां है वहीं से क्रिकेट देख रहा होता है लेकिन पहले भी लोगों को इतना शौक़ था कि इस के लिए टीवी बल्कि सड़कों के किनारे पर्दा लगा कर उस पर क्रिकेट की वीडीयो चलाया करते थे और आज भी कई जगहों पर ऐसा होता है। अभी जिन बूढ़ों के पास (मल्टीमीडिया) मोबाइल फ़ोन या'नी स्मार्टफोन नहीं है वो भी जवानों को पकड़ पकड़ कर मा'लूमात लेते दिखाई देते हैं कि

कौन कौन सी टीम खेल रही है और कितने रन (Run) हुए हैं और कितने विकेट (Wicket) गिरे हैं। इस क़द्र दीवानापन हमारी समझ से बाहर है।

इस और इस जैसी फ़ालतू चीज़ों में पड़ कर ही लोगों ने अपना मक़्सदे ज़िंदगी भुला रखा है। इतनी तवानाई, वक़्त और शौक़ कहीं और दिखाते तो अपनी और अपनी क़ौम की ह़ालत को अच्छा कर पाते और दुनिया व आख़िरत में कामयाब होते।

हमने इस रिसाले में मुख़्तलिफ़ फतावा को जमा किया है जो खेल कूद और ख़ासकर क्रिकेट के बारे में उ़लमाए अहले सुन्नत ने तह़रीर फ़रमाए हैं। ये रिसाला जामिउ़ल फ़तावा का एक ह़िस्सा है जिसमें पिछले सौ साल से ज़ाइद के अ़र्से में लिखे गए उर्दू फ़तावा को जम्अ़ कर दिया गया है। इस की कुल जिल्दों की ता'दाद फ़िलहाल हमें भी नहीं मा'लूम लेकिन एक अंदाज़े के मुताबिक़ ये सौ से ज़ाइद होंगी। अल्लाह तआ़ला इसे क़बूल फ़रमाए।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादिरी
20 नवंबर, 2023

क्रिकेट किया है

हमें नहीं लगता कि क्रिकेट के बारे में बताने की ज़रूरत है क्यों कि लोग हमसे बहुत बेहतर त़रीक़े से इस के बारे जानते हैं। ये रस्मी तौर पर लिखना पड़ रहा है कि क्रिकेट एक खेल है जिसमें दो गिरोह मुक़ाबला करते हैं और त़रीक़ा ये होता है कि एक मैदान में बल्ले और गेंद के साथ कई उसूलों के तह़त कसरत की जाती है। इस की तारीख़ 200-300 साल पुरानी बताई जाती है या'नी तक़रीबन इतने सालों पहले इस खेल का आग़ाज़ हुआ फिर उस के क़वानीन लिखे गए और मौजूदा क्रिकेट हमारे सामने है कि हर मुल्क की एक टीम है और आ़लमी सत़्ह़ पर इस खेल को खेला जाता है।

हमारे मुल्क हिंदुस्तान में इस खेल को ग़ैर मा'मूली अहमिय्यत दी जाती है। हर शहर में एक मैदान देखने को मिल जाता है जिसे ख़ास इसी खेल के लिए बनाया गया है। इस खेल पर करोड़ों अरबों रुपये ख़र्च किए जाते हैं और दूसरी त़रफ़ इस खेल के नाम पर जुए का एक बड़ा बाज़ार चलता है और बड़ी-बड़ी रक़म लोग दाओं पर लगा देते हैं और वो भी सिर्फ़ इतनी बात पर कि फ़ुलां टीम जीत जाएगी।

इस मुख़्तसर तआरुफ़ के बा'द अब हम क्रिकेट के ताअ़ल्लुक़ से उ़लमाए अहले सुन्नत के फ़तावा को नक़्ल करेंगे।

फ़तावा बहरुल उ़लूम से

बहरुल उ़लूम, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मन्नान आ'ज़मी رحمة الله عليه से जामिआ शमसुल उ़लूम (घोसी, मऊ, उतर प्रदेश, हिंद) के एक मुतअ़ल्लिम ने चंद सुवालात किए जिनमें एक ये था कि जो आजकल हिंद व पाक में क्रिकेट राइज है, इस का खेलना और देखना कैसा है? नीज़ उनकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ना कैसा है या'नी क्रिकेट देखने और खेलने वाले शख़्स की इमामत जाइज़ है या नहीं।

आप رحمة الله عليه जवाब में लिखते हैं कि :
खेल की ग़र्ज़ से जो अफ़्आ़ल किए जाएं शरीअ़त में ह़रामो नाजाइज़ हैं।
हदीस शरीफ़ में है:

كُلُّ لَهْوِ الْمُسْلِم حَرَامٌ اِلَّا ثَلَاثَةٌ

(या'नी मुसलमानों के लिए तीन के सिवा सब खेल ह़राम हैं।)
[इन तीन खेलों की तफ़्सील आइन्दा सफ़ह़ात में बयान की जाएगी।]
बिलख़ुसूस आजकल क्रिकेट जो बेशुमार बुराईयों का ज़रीआ़ है, इस खेल के आदियों (आदत बनाने वालों) के पीछे नमाज़ ज़रूर मकरूह है, चाहे खेलने वाले हों या देखने वाले हों।
(फ़तावा बहरुल उ़लूम, ज 5, स 589)

फ़ाइदा :

इस से मा'लूम हुआ कि क्रिकेट एक ऐसा खेल है जो बेशुमार बुराईयों का मज्मूआ़ है और इस का खेलने और देखने वाला शरई़ तौर पर काबिले गिरिफ़्त है हत्ता कि उस की इमामत जाइज़ नहीं और उस के पीछे नमाज़ मकरूह है।

वक़ारुल फ़तावा से

मुफ़्ती-ए-आ'ज़म पाकिस्तान, वक़ारे मिल्लत, अ़ल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी رحمۃ اللہ علیہ से सुवाल किया गया कि हॉकी (Hockey), क्रिकेट और फूटबाल (Football) वग़ैरा देखना और कमेंट्री (Commentary) सुनना कैसा है? जबकि देखने और सुनने से दिल उस की त़रफ़ माइल होता है, आपसे गुज़ारिश है कि क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में इस मसअले का तफ़सीली जवाब इ़नायत फ़रमाएं।

आप رحمۃ اللہ علیہ जवाब में लिखते हैं कि
इब्ने माजा में ये ह़दीस है कि " हर वो शैय जिससे कोई मुसलमान ग़फ़लत में पड़ जाए (वो) बात़िल है मगर कमान से तीर अंदाज़ी करना, अपने घोड़े को सिखाना और अपनी बीवी से मुलाइ़बत (खेल कूद) करना, ये तीन काम ह़क़ हैं "

ह़दीस में वाज़ेह तौर पर बता दिया कि मोमिन की ज़िंदगी लह्वो लइ़ब के लिए नहीं है। लिहाज़ा तंदरुस्ती के लिए टहलना या वर्ज़िश के लिए थोड़ा खेलना तो जाइज़ है मगर क्रिकेट, हाकी जिस तरह खेली जाती है, इस में कोई मक़्सद सही नहीं है। बल्कि क़ौम और मुल्क का बहुत बड़ा नुक़्सान है। करोड़ों रुपये स्टेडीयम बनाने और टीम तैयार करने पर ख़र्च किए जाते हैं। फिर जब मुल्क या बैरूने मुल्क पाँच रोज़ा, तीन रोज़ा और एक रोज़ा जो मैचिज़ (Matches) होते हैं, ऑफ़िस में बैठे हुए मुलाज़िमीन, काम के बजाए रेडीयो या टैलीविज़न से कमेंट्री सुनने और देखने में मसरूफ़ होते हैं। इस में क़ौम के माल की बर्बादी और वक़्त को ज़ाएअ़ करना है। और दीन के नुक़्सान का तो आलम ये है कि हज़ारों आदमी स्टेडीयम में बैठे दिन भर

खेल देखते रहते हैं, ना नमाज़ की परवाह ना अपना वक़्त ज़ाएअ होने की परवाह।

इस्लाम का नाम लेने वाली हुक़ूमत पर अफ़सोस है कि मैच को जुम्अ के दिन ज़रूर रखा जाता है, इस की ये मस्लिहत बताई जाती है कि जुम्अ के दिन आम छुट्टी होती है, हालांकि जुम्अ के इलावा भी, जिस दिन मैच होता है, उ़मूमन बिग़ैर ऐ'लान दफ़ातिर में काम नहीं होता है। हुक़ूमत ने अपने तौर पर जुम्अ की छुट्टी की वजह से जुम्अ को मैच का दिन क़रार दिया है। मगर ये ना सोचा कि हज़ारों लाखों आदमीयों की जुम्अ की नमाज़ छोड़ने का गुनाह हुक़ूमत के ऊपर भी है। बहर सूरत ये सब खेल खेलना नाजाइज़ो ह़राम हैं और उनको देखने और सुनने में वक़्त ज़ाएअ करना भी नाजाइज़ है।

(वक़ारुल फ़तावा, ज. 3, स. 436)

फ़ाइदा:

खेल कूद से इन्सान का दिल ग़ाफ़िल होता है और ये ग़फ़लत बहुत नुक़्सान पहुंचाती है। इस के देखने और कमेंट्री सुनने में भी यही बात पाई जाती है। वर्ज़िश के लिए खेलना एक बहुत अलग शै (चीज़) है लेकिन आजकल जिस तरह ये राइज है वो हमारे सामने है। इस में पैसे और वक़्त दोनों की बर्बादी साफ़ दिखाई दे रही है इस के बावुजूद लोग बाज़ नहीं आते। लोगों को फ़ख़्रिया कहते हुए देखा जाता है कि मैंने फ़ुलां मैच फ़ुलां स्टेडीयम में देखा हालांकि ऐसा करने वालों ने पूरा दिन बिग़ैर नमाज़ के वहां गुज़ारा होता है ये आख़िर कैसे जाइज़ हो सकता है।

फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल से

अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी رحمۃ اللہ علیہ से इंदौर (मध्य प्रदेश से सुवाल किया गया कि वाली बाल (Volley Ball), क्रिकेट वग़ैरा खेल शरीअ़त के नज़दीक खेलना कैसा?

आप जवाब में लिखते हैं कि :
खेल की जितनी भी क़िस्में हैं सब बात़िल हैं सिर्फ तीन क़िस्म के खेल की ह़दीस में इजाज़त है। बीवी से खेल करना, घोड़े की सुवारी और तीर अंदाज़ी करना, ऐसा ही दुर्रे मुख़्तार में भी है। और दौड़ में मुक़ाबला करना भी जाइज़ है बशर्ते कि जुए के साथ ना हो। इसी त़रह़ कुश्ती लड़ना अगर लह्वो लइ़ब के त़ौर पर ना हो बल्कि जिस्म में क़ुव्वत लाने और कुफ़्फ़ार से लड़ने की नियत हो तो जाइज़ मुस्तह़्सन बल्कि कारे सवाब है बशर्ते कि सित्र पोशी के साथ हो। (बहार शरीअ़त)
(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, ज. 2, स. 546)

फ़ाइदा:

जिन तीन खेलों की ह़दीस में इजाज़त दी गई है उनमें फ़ाइदे हैं। उनके इलावा भी कुछ खेल सित्र पोशी और अच्छी नियत के साथ जाइज़ हैं जैसे - दौड़ का मुक़ाबला और कुश्ती लड़ना लेकिन क्रिकेट वग़ैरा जिस त़रह़ आजकल खेले जाते हैं उनमें ऐसी कोई ख़ैर की बात नहीं बल्कि कई क़िस्म की बुराईयां पाई जाती हैं लिहाज़ा उस की इजाज़त नहीं है ।

वर्ज़िश के लिए खेले तो

फ़तावा मर्कज़ तर्बियते इफ़्ता में है कि राजस्थान (हिंद) से किसी ने सुवाल किया कि क्रिकेट मैच खेलना, देखना और इस में दिलचस्पी रखना कैसा है? और अगर वर्ज़िश के तौर पर खेलते हैं तो क्या हुक़्म है

अल जवाब: क्रिकेट या इस त़रह का कोई खेल अगर लह्वो लइ़ब के त़ौर पर खेले तो हरामो गुनाह है और इस से इज्तिनाब वाजिब, क़ुरआने करीम फ़रमाता है:

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

तर्जुमा : और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं कि अल्लाह की राह से बहका दें बेसमझे और उसे हंसी बना लें उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (सूरए लुक़्मान, आयत 6)

इस आयत की तफ़्सीर में इमाम नसफ़ी رحمة الله عليه फ़रमाते हैं :

عن ابن عباس انه قال لهو الحديث كل لهو و لعب وترنمات وفضول كلام قوله ليضل عن سبيل الله اى ليعرف الناس عن دين الله بغير علم اى بلا حجة ولا برهان ويتخذها هزوا أولئك يعنى يستهزى بكتاب الله

जिस त़रह़ खेलना ह़राम है वैसे ही देखना भी ह़राम है, चुनांचे इमाम सदर शहीद हुस्सामुद्दीन समरक़ंदी एक ह़दीस नक़्ल फ़रमाते हैं :

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه قال استماع الملاهى معصية والجلوس عندها فسق والتلذذ بها كفر اه

ऐसा ही काफ़ी में है।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है:

كل ما يلهو به الرجل المسلم باطل الا بقوس و تاديبه فرسه وملاعبته اهله فانهن من الحق

(ज. 1, स. 293)

और अगर वर्ज़िश की नियत से खेलें तो चंद शराइत की पाबंदी के साथ जाइज़ है :

(1) नमाज़ के अवक़ात में ना खेलें।

(2) अपने दीनी मशाग़िल नीज़ तलबे इ़ल्म से ग़ाफ़िल हो कर खेल में ही इन्हिमाक ना हो।

(3) टूर्नामेंट (Tournament) मैं हिस्सा ना ले ।

(4) रान और दूसरे आ'ज़ा जिनको छुपाना वाजिब है ना खोले। واللہ اعلم

(फ़तावा मर्कज़ तर्बियते इफ़्ता, ज. 2, स. 489)

फ़ाइदा:

वर्ज़िश के लिए खेलने का ये मतलब नहीं कि रोज़ाना घंटों का वक़्त इस में लगाया जाए। आज कल वर्ज़िश के नाम पर लोग अपना मतलब पूरा करना चाहते हैं उन्हें समझना चाहिए कि वर्ज़िश के लिए थोड़ा बहुत खेला जाता है। और फिर इस में भी शराइत का लिहाज़ करना ज़रूरी है। एक बात ये भी काबिले ग़ौर है कि शुरूआ़त वर्ज़िश के नाम पर की जाती है लेकिन खेलते खेलते दिल ऐसा लग जाता है कि फिर वक़्त गुज़रने का एहसास नहीं होता और फिर ऐसा भी होता है कि टूर्नामेंट में हिस्सा ले लिया जाता है या मक़ामी नौजवानों को जम्अ़ कर के टूर्नामेंट शुरूअ़ कर दिया जाता है। इन बातों से ये नतीजा निकालने में दुशवारी नहीं होती कि वर्ज़िश के लिए भी इसे खेलना

ख़तरनाक है। वर्ज़िश के लिए दूसरे कई काम किए जा सकते हैं। क्रिकेट में वर्ज़िश का नाम लेकर आने वाले इसी में डूब जाते हैं।
अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को इस फ़ुज़ूल काम से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

मोबाइल फ़ोन पर गेम (Game)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती ज़ुल्फ़िक़ार ख़ान नई़मी साहिब से जामिअ़तुर्रज़ा के एक मुतअल्लिम ने मोबाइल फ़ोन के ताअ़ल्लुक़ से कई मसाइल दरयाफ़्त किए जिनमें एक ये भी था कि मोबाइल फ़ोन पर गेम (खेल) खेलना कैसा है

आप जवाब में लिखते हैं :
हदीस में है :

كل ما يلهو به الرجل المسلم باطل الا بقوس و تاديبه فرسه وملاعبته اهله فانهن من الحق (سنن النسائی باب الرمي في سبيل الله، ص 202)

हर वो खेल जिससे मुसलमान आदमी खेलता है बातिल है मगर उस का अपनी कमान से तीर अंदाज़ी करना और अपने घोड़े को तर्बियत देना और अपनी बीवी से छेड़-छाड़ पस ये खेल हक़ हैं।

मुल्ला अली क़ारी इस ह़दीस की शरह़ करते हुए रक़म तराज़ हैं :

وفي معناها كل ما يعين على الحق من العلم والعمل اذا كان من الامور المباحة كا المسابقة بالرجل والخيل والابل والتمشية لتنزه على قصد تقوية البدن وتطرية الدماغ

ह़दीस में बयान कर्दा खेलों में हर वो खेल दाख़िल है जो इल्मो अ़मल के लिए मुआविन बनता हो और फ़ीनफ्सिही जाइज़ कामों में इस का शुमार होता हो जैसा कि पैदल दौड़, घोड़ दौड़, ऊंटों की दौड़, या बदन की तक़्वियत और दिमाग़ की तरावट के इरादा से चहलक़दमी।
(मिरक़ातुल मफ़ातिह 396/7)

हुज़ूर आ'ला ह़ज़रत رحمة الله عليه फ़रमाते हैं : लज़्ज़ते लइ़ब शरअ़ करीमो अक़्ले सलीम के नज़्दीक फ़ाइदा मो'तद बहा नहीं मगर जबकि लह्व मुबाह हुआ और ता'ब के बा'द इस से तरवीज क़ल्ब मक़सूद अब ना वो अबस रहे ना हक़ीक़त लइ़ब अगर्चे सूरत लइ़ब हो।

वलिहाज़ा हदीस में है, हुज़ूर सय्यिदे अकरम صلى الله عليه وسلم फ़रमाते हैं :

الهواو العبوافانی اکره ان یرمی في دینکم غلظة، رواه البیهقي في شعب الایمان

खेलो कुदो कि में इस को नापसंद करता हूँ कि कोई तुम्हारे दीन में सख़्ती देखे इस ह़दीस को बैहक़ी ने शो'बुल ईमान में रिवायत किया है।
इमाम इब्ने हजर मक्की कफ़र्रिआ़अ़ फिर सय्यिद आ़रिफ़ बिल्लाह ह़दीक़ा नदिय्यह में फ़रमाते हैं :

اللهو المباح ماذون فیه منه ﷺ

जाइज़ खेल की नबीए करीम ﷺ की जानिब से इजाज़त है
(फ़तावा रज़विय्या क़दीम, ज. 201)

इन इबारात से ये नतीजा निकला कि मोबाइल पर हर वो गेम खेलना जाइज़ है जिसमें दीनी या दुन्यवी फ़ाइदा हो या बदन की तक़्वियत और दिमाग़ की तरावट मक़्सूद हो और इस में ख़िलाफ़े शरअ़ कोई अम्र जैसे जानदार की तस्वीर वग़ैरा ना हो। और ऐसे गेम जिसमें जानदार की तसावीर हो और इस गेम से कोई दुन्यवी या दीनी फ़ाइदा भी ना हो और ना ही इस से बदन या

दिमाग़ को ताज़गी मुयस्सर आए इस में अपना वक़्त ज़ाएअ़ करना ख़ाली अज़ कराहत नहीं।
आ’ला ह़ज़रत फ़रमाते हैं :
हर खेल और अबस फ़ेअ़ल जिसमें ना कोई ग़र्ज़े दीन ना कोई मन्फ़िअते जाइज़ा दुन्यवी हो सब मकरूहो बेज़ा है कोई कम, कोई ज़ियादा अलख़।
(फ़तावा रज़विय्या क़दीम, ज. 9, स. 44)

फ़ाइदा:

इस से उसूल मा’लूम हो गया कि खेल वही जाइज़ है जिससे दीनी या दुन्यावी फ़ाइदा मक़्सूद हो और इसी मक़्सद की मिक़्दार खेला जाए। इस में ये भी ज़रूरी है कि शराइत की पाबंदी की जाए मस्लन वो खेल कोई ग़ैर शरई़ काम ना हो और इस खेल में कोई नाजाइज़ काम ना करना पड़े जैसे सित्रे औ़रत का खोलना वग़ैरा।

टीवी पर क्रिकेट मैच देखना कैसा है ?

सुवाल: टीवी पर क्रिकेट मैच देख सकते हैं ?

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

अव्वलन ये ज़हन नशीन रहे कि कोई भी खेल बतौरे खेल खेलना लह्वो लइ़ब होने की वजह से मम्नूअ़ है और मुरव्वजा क्रिकेट लह्वो लइ़ब के त़ौर पर ही खेली जाती है, तो जब इस त़रह़ खेलना मन्अ़ है तो इनको देखने की भी इजाज़त नहीं।
फिर ये कि टी वी, मोबाइल, कम्पयूटर वग़ैरा किसी भी स्क्रीन पर क्रिकेट का मैच देखने में इस के इलावा मुतअ़द्दिद ख़िलाफ़े शरअ़ कामों का

इर्तिकाब पाया जाता है, मस्लन मैच के दौरान बेपर्दगी पर मुश्तमिल मनाज़िर दिखाए जाते हैं, फिर ऐसे इश्तिहारात भी चलाए जाते हैं, जिनमें बेपर्दा औरतें होती हैं। यूंही बराहे रास्त मैच देखने में भी ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर का इर्तिकाब मुम्किन है, मस्लन मर्दों औरतों का इख़्तिलात, म्यूज़िक का सुनना वग़ैरा, इसी त़रह़ कितनों की नमाज़ें क़ज़ा हो जाती हैं और ख़ास त़ौर पर जमाअ़त का एह्तिमाम तो बहुत मुश्किल हो जाता है, तो जिस काम में भी ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर का इर्तिकाब पाया जाए, ख़्वाह वो क्रिकेट खेलना हो, या देखना या उनके इलावा कोई काम, वो नाजाइज़ो ह़राम और गुनाह है।

मुफ़्तीए आ'ज़मे पाकिस्तान अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद वक़ारुउद्दीन رحمة الله عليه से सुवाल किया गया कि क्रिकेट खेलना और देखना कैसा है? तो आप رحمة الله عليه ने इरशाद फ़रमाया ह़दीसे मुबारका में है :

كل ما يلهو به المرء المسلم باطل إلا رميه بقوسه و تأديبه فرسه وملاعبته امرأته فإنهن من الحق

या'नी हर वो शै जिससे कोई मुसलमान ग़फ़्लत में पड़ जाए बात़िल है मगर कमान से तीर-अंदाज़ी करना, अपने घोड़े को सिखाना, और अपनी बीवी से मुलाइबत (खेल कूद) करना ये तीन काम हक़ हैं।
(सुनन् इब्ने माजा, स. 202 मतबूआ : कराची)

ह़दीस में वाज़ेह त़ौर पर बता दिया कि मोमिन की ज़िंदगी लह्वो लइ़ब के लिए नहीं है। लिहाज़ा तंदरुस्ती के लिए टहलना या वर्ज़िश के लिए थोड़ा खेलना तो जाइज़ है मगर क्रिकेट वग़ैरा खेल जिस त़रह़ खेले जाते हैं इस में कोई मकसदे सह़ी नहीं बल्कि क़ौम और मुल्क का बहुत बड़ा नुक़्सान है इस में क़ौम के माल की बर्बादी और वक़्त को ज़ाएअ़ करना है और दीन

के नुक़्सान का तो आ़लम ये है कि ह़ज़ारों आदमी बैठे दिनभर खेल देखते रहते हैं ना नमाज़ की परवाह ना अपना वक़्त ज़ाएअ़ होने की परवाह बहर सूरत ये खेल खेलना नाजायज़ो ह़राम है और उनको देखने और सुनने में वक़्त ज़ाएअ़ करना भी नाजाइज़ है।

(मुलख़सन अज़ वक़ारुल फ़तावा, ज. 3, स. 436 - 437 कराची)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہ اَعْلَم صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मुजीब : अबू हफ़्स मुह़म्मद इरफ़ान मदनी अ़त्तारी
फ़तवा नंबर : WAT-1258
तारीख़ इजरा : 18 रबीउ़स्सानी 1444 ह./14 नवंबर 2022 ई.
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी)

हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ह से क्रिकेट के बारे में ग्यारह सुवालात

हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ह, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से क्रिकेट के बारे में कई मर्तबा सुवाल किया गया। जामिअ़तुर्रज़ा की वेबसाइट पर ऑडीयो की शक्ल में तलाश करने पर ग्यारह सुवालात मिलते हैं जिनको हम यहां नक़्ल कर रहे हैं :

(1) क्रिकेट कोचिंग चलाना

सुवाल: क्या क्रिकेट कोचिंग (Cricket Coaching) चलाना या'नी क्रिकेट खेलना सिखाना कैसा है? और इस से आमदनी जाइज़ है या नहीं ?

जवाब: ये नाजाइज़ है और आमदनी भी जाइज़ नहीं।

(2) क्रिकेट से पैसे कमाना

सुवाल: क्रिकेट खेल कर पैसे कमाना जाइज़ है या नाजाइज़?

जवाब: इस में तफ़्सील दरकार है कि क्रिकेट किस के साथ खेला और किस ने पैसे दिए। (इस के बा'द जवाब दिया जा सकता है।)

फ़ाइदा:

ये मुजमल सुवाल है जो तफ़्सील तलब है क्यों कि इस की कई सूरतें बन सकती हैं। ऐसी ही अगर कोई सूरत किसी के ज़हन में हो तो उसे किसी सुन्नी मुफ़्ती साहिब को तफ़्सील बता कर जवाब मा'लूम किया जाए।

(3) वर्ज़िश के लिए खेलना

सुवाल: क्रिकेट को फ़िटनैस (Fitness) के लिए खेलना कैसा है?
जवाब: कोई और वर्ज़िश की जाए।

फ़ाइदा:

हम पहले भी इस पर लिख चुके हैं कि वर्ज़िश के नाम पर अगर्चे थोड़ा बहुत कभी कभार खेल लेना जाइज़ है लेकिन बेहतर यही है कि वर्ज़िश के लिए कोई और ज़रीया अपनाया जाए। खेलने वालों को फिर इस की आदत लग जाती है।

(4) टीवी पर क्रिकेट देखना

सुवाल किया गया ऐसे शख़्स के बारे में जो टीवी पर क्रिकेट देखता है और दूसरों को भी दिखाता है।

जवाब: ऐसा शख़्स फ़ासिक़ है और इस का ये अ़मल नाजाइज़ ह़राम है।

(5) टीवी पर क्रिकेट देखने वाले की इमामत का हुक्म

सवाल: किया गया कि टीवी पर क्रिकेट देखने वाले की इमामत का क्या हुक्म है?
जवाब: जो शख़्स टीवी पर क्रिकेट देखने का शौक़ीन है तो उसे इमाम बनाना जाइज़ नहीं।

(6) क्रिकेट टीम के लिए दुआ़ करना

सुवाल किया गया कि किसी टीम के लिए उस के जीतने की दुआ करना कैसा है? जैसा कि वर्ल्ड कप (World Cup) के वक़्त की जाती है।
जवाब: लह्वो लइ़ब शरअन नाजाइज़ो ह़राम है।

फ़ाइदा:

जब ये खेल कूद जाइज़ नहीं तो फिर ऐसे काम के हक़ में दुआ़ करना भी जाइज़ नहीं।

(7) क्रिकेट को पेशा बनाना

सुवाल किया गया कि क्रिकेट को पेशा बनाना कैसा है? क्या इस के ज़रीए पैसे कमाए जा सकते हैं जब कि नमाज़ पढ़ी जाए और सित्र पोशी भी हो।

जवाब: हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ह ने ऐसे शख़्स को हिदायत फ़रमाई कि इस लह्वो लइ़ब की सूरत से बचे और कोई संजीदा पेशा अपनाए और अल्लाह रोज़ी देने वाला है। कोई शराफ़त वाला काम किया जाए।

(8) चंद मिनट के लिए क्रिकेट, फूटबाल, टेनिस वग़ैरा खेलना

अंग्रेज़ी में सुवाल किया गया कि चंद मिनटों के लिए क्रिकेट, टेनिस वग़ैरा खेलना कैसा है?

जवाब: लह्वो लइ़ब (या'नी खेल कूद) शरअन नाजाइज़ हैं। अगर वर्ज़िश की नियत से कभी कभार थोड़ा खेल लिया जाए और इस में सित्र पोशी हो तो हर्ज नहीं है।

(9) शम्अ़ सबिस्ताने रज़ा में क्रिकेट का वज़ीफ़ा

सुवाल किया गया कि किताब शम्अ़ सबिस्ताने रज़ा में है कि आ'ला ह़ज़रत ने कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ क्रिकेट जीतने का कोई वज़ीफ़ा इ़नायत किया था, उस की क्या हक़ीक़त है?

जवाब : ये मो'तमद नहीं और इस किताब में कई ऐसी बातें आ'ला ह़ज़रत की त़रफ़ और बुज़ुर्गों की तरफ़ मंसूब कर दी गई हैं।

फ़ाइदा:

शम्अ़ सबिस्ताने रज़ा नामी किताब को बा'ज़ लोग आ'ला ह़ज़रत की किताब समझते हैं जो कि बिल्कुल ग़लत़ है। ये किताब आ'ला ह़ज़रत की नहीं है। इस किताब के बारे में उ़लमाए अहले सुन्नत ने कलाम फ़रमाया है।

ये मो'तबर नहीं।

(10) क्रिकेट और टेनिस की इजाज़त नहीं

सुवाल किया गया कि क्या क्रिकेट और टेनिस खेलने की इजाज़त है?
जवाब: इजाज़त नहीं है।

(11) टाइम पास के लिए खेलना

सुवाल किया गया कि बिना पैसे लगाए सिर्फ टाइम पास (Time Pass) के लिए कैरम (Carrom) और क्रिकेट वग़ैरा खेल सकते हैं?
जवाब: नहीं खेल सकते क्यों कि ये खेल कूद में शुमार होगा। (मुलख़सन)

फ़ाइदा:

मज़्कूरा सुवालात और उनके जवाबात से बिलकुल वाज़ेह समझ में आता है कि क्रिकेट वग़ैरा खेलने की इजाज़त नहीं और जहां तक इजाज़त है भी तो इस से बचना भी बेहतर है क्यों कि "ज़ुकाम को रोको ताकि बुख़ार ना आए" पर अमल करना चाहिए।

ख़ातिमा, ख़ुलासा और नोट

क्रिकेट के ताअ़ल्लुक़ से हमने यहां जो फ़तावा नक़्ल किए वो इस मसअले की तफ़्सील के लिए काफ़ी मा'लूम होते हैं। मज़्कूरा पूरी बेहस से ये बातें समझ में आती हैं:

1. क्रिकेट खेलना नाजाइज़ है बल्कि कई नाजाइज़ कामों का मज्मूआ है।
2. लह्वो लइ़ब या'नी खेल कूद इस्लाम में जाइज़ नहीं क्यों कि इन्सान की पैदाइश का ये मक़्सद नहीं और ये चीज़ें इन्सान को ग़फ़्लत में डाल देती हैं। ये देखा भी गया है कि इन कामों में पड़ने वाले किसी काम के नहीं रहते और

अपनी दुनिया के साथ साथ अपनी आख़िरत को भी फ़रामोश किए बैठे होते हैं।

3. नौजवानों का इस में इस क़द्र दीवानापन क़ौम के लिए बहुत अफ़सोसनाक और मुस्तक़्बिल के लिए ख़तरनाक है।

4. वर्ज़िश के नाम पर अपनी तबिय्यत की बात मनवाने और नाजाइज़ सूरत को भी जाइज़ समझना बहुत बुरी बात है।

5. वर्ज़िश के लिए जो इजाज़त है वो बहुत ख़ास है और इस से बचना भी बेहतर है। वर्ज़िश करने के बेशुमार तरीक़े हैं कि जहां बंदा अकेले वर्ज़िश कर सकता है। ये क्या बात हुई कि बंदा ख़ुद वर्ज़िश करने के लिए एक जमाअ़त बना ले और सब का वक़्त ज़ाएअ़ करे। ये सब हीले बहाने करने से बचना चाहिए और मुकम्मल इस खेल कूद की सूरत से परहेज़ करना चाहिए।

6. इस के नाम पर जुआ खेलना भी तबाही का बाइ़स है। ये कई ह़राम कामों को एक साथ करने के बराबर है।

खेल कूद के मौज़ूअ़ पर और कई फ़तावा हैं जिन्हें हम दूसरे उ़न्वानात के तह़्त लाएँगे। मिसाल के त़ौर पर शतरंज खेलना, ताश के पत्ते खेलना, कैरम बोर्ड का खेल और इसी त़रह़ कई खेलों की तफ़्सील हम जामिउ़ल फ़तावा के दूसरे हिस्सों में पेश करेंगे। आख़िर में एक लतीफ़ा अर्ज़ कर के इस रिसाले को मुकम्मल करना चाहता हूँ।

लतीफ़ा :

शुरू से ही मुझे इस खेल से एक नफ़रत सी है लेकिन इस की वजह वो नहीं है जो में अब बताने जा रहा हूँ।

मैंने अपनी ज़िंदगी में एक दो मर्तबा ही इस खेल को खेला होगा। मुझे एक ही बार खेलना ज़ियादा याद है जब मेरी उम्र तक़रीबन 14 साल रही होगी।

कुछ दोस्तों ने मुझे क्रिकेट खेलने के लिए बुलाया तो मैंने कहा कि मुझे नहीं आता लेकिन वो इसरार कर के मुझे ले गए। उस दिन दो मैचिज़ (Matches) हुए। कुल ग्यारह से बारह ही लड़के खेलने वाले थे तो दो टीम बनाने का तरीक़ा ये था कि जब दो लोग बल्लेबाज़ी कर रहे होते तो सारे फील्डिंग (Fielding) करते या'नी मुझे पूरे खेल में दोनों त़रफ़ से फील्डिंग करनी पड़ी। बल्लेबाज़ी में पहले उसे ही उतारा जाता जो खेलने में अच्छा होता तो इस त़रह़ मुझे बल्लेबाज़ी का मौक़ा ही नहीं मिला। पहले मैच में ही थक गया था फिर दूसरे मैच की छे गेंदों के लिए बल्लेबाज़ी का मौक़ा मिला जिसमें छत्तीस (36) रन बनाने थे और जब बल्ले को पकड़ कर खड़ा हुआ तो आवाज़ आई कि "आज तुम्हें हमें जीत दिलानी है" फिर दुबारा कभी क्रिकेट खेला हो मुझे याद नहीं।

अल्लाह तआ़ला का करम है कि ऐसी चीज़ों से दूर रखा और अपने दीन की इशाअत की तौफ़ीक़ बख़्शी। रब्बे करीम हमारे नौजवानों को दीने ह़क़ की ख़िदमत में अपनी तवानाई और वक़्त को ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादिरी
20 नवंबर, 2023 ई.

Abde Mustafa Publications
AMO
Powered By Abde Mustafa Organisation
abdemustafa.org
@abdemustafaorg